आचार्य सुश्रुत: वह बालक जिसने दुनिया को सर्जरी सिखाई

*उन्हें पूरी दुनिया "**सर्जरी का जनक**" **(Father of Surgery)** कहती है।*

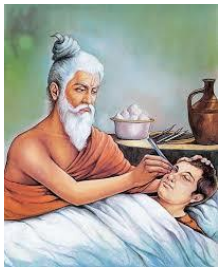

"एक अच्छा सर्जन वही है जिसके पास सिंह जैसा साहस, मां जैसे कोमल हाथ और चील जैसी तेज नजर हो।"

एक दयालु और जिज्ञासु बालक

बहुत समय पहले गंगा नदी के किनारे एक आश्रम था। वहीं एक बालक रहता था, जिसका नाम सुश्रुत था। सुश्रुत पढ़ाई में तेज था, लेकिन उसकी सबसे बड़ी खूबी थी—दूसरों की मदद करना। जब भी कोई पक्षी घायल हो जाता या कोई जानवर चोटिल हो जाता, वह तुरंत उसकी देखभाल करता।

एक दिन उसने एक घायल हिरन को देखा। हिरन दर्द से कराह रहा था। सुश्रुत ने उसके घाव पर औषधि लगाई और उसे आराम पहुंचाया।

उस रात उसके मन में एक सवाल आया—

"अगर जानवरों के घाव ठीक हो सकते हैं, तो क्या इंसानों की बड़ी-बड़ी बीमारियां भी ठीक की जा सकती हैं?"

यही सवाल उसकी जिंदगी बदलने वाला था।

अपने सवालों का जवाब पाने के लिए वह महान वैद्य **गुरु धनवंतरि** के पास पहुंचा।

गुरु ने उसकी आंखों में सीखने की चमक देखी।

उन्होंने मुस्कुराकर कहा,

"बेटा, चिकित्सा केवल एक काम नहीं है। यह दुखी लोगों की सेवा करने का सबसे पवित्र मार्ग है।"

बस, उसी दिन से सुश्रुत ने चिकित्सा विज्ञान सीखना शुरू कर दिया।

तरबूज बना उसका पहला मरीज

उस समय न अस्पताल थे और न अभ्यास के लिए नकली मॉडल। इसलिए गुरु जी ने एक अनोखा तरीका अपनाया। वे सुश्रुत को कद्दू, खीरा और तरबूज देते थे। सुश्रुत घंटों उन पर चीरा लगाने और सिलाई करने का अभ्यास करता। कई बार गलती होती। कई बार निशान टेढ़े हो जाते। लेकिन वह हार नहीं मानता। वह रोज़ अभ्यास करता। धीरे-धीरे उसके हाथ इतने कुशल हो गए कि वह बहुत बारीक काम भी आसानी से करने लगा।

वह हमेशा कहता था—

"अभ्यास ही सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है।"

वह रात जिसने इतिहास बदल दिया

एक रात आश्रम के दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक हुई। दरवाजा खोलते ही सुश्रुत ने देखा कि एक व्यक्ति दर्द से तड़प रहा था। लड़ाई में उसकी नाक कट गई थी।

उस समय यह बहुत बड़ी समस्या मानी जाती थी। वह व्यक्ति रोते हुए बोला,

"क्या मैं कभी पहले जैसा दिख पाऊंगा?"

सुश्रुत ने उसका हाथ पकड़कर कहा,

"हिम्मत मत हारो। मैं पूरी कोशिश करूंगा।"

फिर उन्होंने बड़ी सावधानी से उपचार शुरू किया। उन्होंने चेहरे की त्वचा का उपयोग करके नई नाक बनाई और उसे सिला। कुछ सप्ताह बाद वह व्यक्ति पूरी तरह ठीक हो गया। उसका चेहरा फिर से सामान्य दिखने लगा। लोग आश्चर्यचकित रह गए।

यही दुनिया की पहली सफल **प्लास्टिक सर्जरी** मानी जाती है।

यहीं नहीं रुके सुश्रुत

इस सफलता के बाद भी उन्होंने सीखना और सिखाना नहीं छोड़ा।

उन्होंने अपना पूरा जीवन चिकित्सा विज्ञान को समर्पित कर दिया।

उन्होंने एक महान पुस्तक लिखी—**"सुश्रुत संहिता"**।

इस पुस्तक में उन्होंने सैकड़ों रोगों और उपचारों का वर्णन किया।

उन्होंने 125 से अधिक शल्य चिकित्सा उपकरणों का विवरण दिया।

उन्होंने यह भी बताया कि ऑपरेशन से पहले औजारों को साफ रखना कितना जरूरी है।

आज भी डॉक्टर सफाई और संक्रमण से बचाव के जिन नियमों का पालन करते हैं, उनकी सोच में सुश्रुत के विचार दिखाई देते हैं।

आखिरी सीख

जब सुश्रुत वृद्ध हो गए, तब उन्होंने अपने शिष्यों से कहा—

"एक अच्छा सर्जन वही है जिसके पास सिंह जैसा साहस, मां जैसे कोमल हाथ और चील जैसी तेज नजर हो।"

उनके ये शब्द आज भी डॉक्टरों और विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं।

बच्चों के लिए सीख

- हमेशा सवाल पूछो और सीखने की इच्छा रखो।
- कठिनाइयों से मत डरो।
- अभ्यास सफलता की चाबी है।
- दूसरों की मदद करना सबसे बड़ा काम है।
- अपने सपनों के लिए लगातार मेहनत करो।

प्रेरक संदेश

एक छोटा सा जिज्ञासु बालक आगे चलकर पूरी दुनिया का महान सर्जन बना।

अगर सुश्रुत हजारों साल पहले सीमित साधनों में इतना बड़ा काम कर सकते हैं, तो आज के बच्चे भी मेहनत, लगन और अच्छे विचारों से अपने सपनों को जरूर पूरा कर सकते हैं।

याद रखो—बड़े सपने देखने वाले ही इतिहास बनाते हैं।